अध्याय–प्रथम

शोध परिचय

अध्याय – प्रथम

1.0.0.0 प्रस्तावना –

जब हम बाह्य संसार को देखते हैं तो हमें उसमें परिवर्तन होते हुए दिखाई पड़ते हैं। कुछ विचारक इस परिवर्तन के विषय में अनेक दृष्टियों से विचार करते हैं। परिवर्तन का विवेचन दार्शनिक जिज्ञासा का प्रथम लक्षण है। हमें यह जिज्ञासा होती है कि परिवर्तन अंतिम तथ्य है या केवल आभास मात्र। प्रसिद्ध यूनानी विचारक 'पार्मिनाइडिस' में परिवर्तन की असत् का लक्षण कहा है। इसके विपरीत 'हिरैकिलट्स' ने सारी सत्ता को प्रवाह माना है, उनके अनुसार कोई व्यक्ति एक ही नदी में दो बार नहीं कूद सकता।

शिक्षा सामाजिक व्यवस्था का अंग है। यह एक व्यापक प्रणाली की उपप्रणाली है। अतः शिक्षा प्रणाली में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। चर परिवर्तन कभी मन्थर गति से, कभी द्रुत गति से होता है। शिक्षा समाज की नाड़ी है। शिक्षा प्रणाली को देखकर सामाजिक प्रणाली का अनुमान सहज में परिवर्तन होता है और शिक्षा में परिवर्तन के द्वार अवरूद्ध कर दिए जाते हैं, तो शिक्षा प्रणाली अर्थहीन हो जाती है और समाज उसे उखाड़ कर फेंक भी सकता है।

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली अनवतर क्रिया है। बालक अपने आस–पास से प्रत्येक समय कुछ न कुछ सीखता है। प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से सीखते रहते हैं। यह सीखना सीखाना ही शिक्षा है। प्रत्येक समय उसका प्रभाव किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान रहता हैं जोन डी.वी. ने शिक्षा के बारे में कहा है कि शिक्षा बालक की उन समस्त आंतरिक शक्तियों का विकास है, जिससे वह अपने संभावनाओं की पूर्ति कर सके। उनके अनुसार शिक्षा त्रिमुखी है, जिसमें शिक्षक, विद्यार्थी तथा वातावरण आते हैं।

शिक्षा मनुष्य का सबसे महत्वपूर्ण अवष्किार है, यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जो जन्म से मृत्यु तक चलती है। यह वृद्धि की एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्ति की उसकी रूचि, शक्ति एवं योग्यता को स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है। शिक्षा के लक्ष्यों में व्यापक दिशा निर्देश हैं, जो शैक्षणिक प्रक्रियाओं के तय किए गए आदेशों और स्वीकृत सिद्धांतों से संगति बिठाने में मदद करते हैं। शिक्षा के

लक्ष्य समाज की मौजूदा महत्वकांक्षाओं व जरूरतों के साथ शाश्वत मूल्यों तथा समाज के तात्कालिक सरोकारों सहित वृहद मानवीय आदर्शों को भी प्रतिबिंबित करते हैं।

शिक्षक एक कलाकार है और विद्यार्थी उनकी कृति है। अन्य कलाकारों की कृति बिगड़ जाने पर कम हानि होती है, पर यदि शिक्षक की कृति बिगड़ जाये, तो सही राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता है। शिक्षक एक माली है और विद्यार्थी एक पौधा है। माली के बिना भी पौधे का विकास होता है, पर माली जैसे सही प्रकार शिक्षक के निर्देशन से विद्यार्थी का विकास सही होता है।

शिक्षा ही एक ऐसा साधन है, जिससे मनुष्य को सामाजिक गुण प्राप्त होते हैं। पहले की शिक्षा और आज की शिक्षा में बहुत अंतर है। परंपरागत शिक्षा स्थान पर आज आधुनिक शिक्षण शुरू हो गया है। शाला ही वही स्थान है जहाँ पर योग्य वातावरण निर्मित करके शिक्षक बालकों में बीज रूपी निहित शक्तियों को बाहर लाकर उन्हें राष्ट्र का एक उपयोगी व सक्रिय सदस्य बना सकता है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है कि बच्चों को क्रिया द्वारा सिखाना चाहिए। मनुष्य को जीवन में अधिक से अधिक सक्रिय होना चाहिए। इससे वह अपने अन्तर्निहित गुणों को व्यक्त कर सकता है। इस प्रकार क्रियाशील बनकर अपनी वास्तविकताओं को प्रकट कर मनुष्य बराबर नई–नई वस्तुओं का अनुभव करता है। उनका मानना था क्रिया के माध्यम से शिक्षा दी जाए, चूँकि मनुष्य मनीशारीरिक प्राणाली है।

अतः हम शरीर और मस्तिष्क को एक–दूसरे से अलग नहीं रख सकते। गुरुदेव का मानना था कि क्रियाऐं बच्चों के अपने जीवन से संबंधित होनी चाहिए। क्रिया में बच्चों की रूचि हो। साथ ही की जाने वाली क्रिया को वे अपने ढंग से सम्पादित करने के लिए स्वतंत्र हों और तत्संबंधी क्रियाओं के सम्पादन में वे जटिलता का अनुभव करें।

हमारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा 2005 के आधार पर विद्यार्थी को स्वंय सीखने के अवसर प्रदान करना चाहिए। बच्चों को पढ़ाते समय यदि उसे अलग–अलग तरह के दैनिक अनुभव से जोड़ दिया जाए, तो बच्चे किसी भी विषय को बिना किसी अतिरिक्त प्रयास के आसानी से ग्रहण कर सकते हैं। अनुभव के द्वारा सीखते समय उन्हें करके सीखने का अवसर मिलता है। स्वयं कुछ करके सीखा हुआ ज्ञान

दीर्घकालीन तक उनके स्मृति-पटल पर रहता है। बस आवश्यकता इतनी है कि शिक्षक किसी भी विषय को सिखाते समय उसे बच्चे से अनुभव से जोड़कर रूचिकर बना लें। शिक्षक को बच्चों को समूह में भागीदारी के द्वारा कार्य करने की आदत डालनी चाहिए। क्योंकि समूह में बच्चे एक दूसरे से जुड़कर एवं समान पथ के बच्चों के साथ शीघ्र ही खेल-खेल में ही सीख जाते हैं।

स्वतंत्र विचार प्रक्रिया और हल करने के विविध तरीकों को प्रोत्साहित करने वाले चुनौतीपूर्ण कार्य शिक्षार्थियों में स्वतंत्रता रचनात्मकता और आत्मानुशासन को प्रोत्साहित करते हैं। बाल केन्द्रित शिक्षा शास्त्र का अर्थ उनकी सक्रिय सहभागिता की प्रथमिकता देना। इस प्रकार के शिक्षा-शास्त्र में बच्चों मनोवैज्ञानिक विकास व अभिरूचियों के मद्देनज़र शिक्षा को नियोजित करने की आवश्यकता होती है। इसलिए शिक्षा की योजना ऐसी हो कि वह विशेषताओं व जरूरतों की विशाल विविधताओं के तहत् भौतिक सांस्कृतिक व सामाजिक प्राथमिकताओं को संबंधित करें।

शिक्षा में गतिविधियों का अर्थ होता है, कोई ऐसी प्रवृत्ति जिससे छात्रों को शिक्षा ग्रहण करने में अधिक सरलता प्रदान करना एवं उनकी अभ्यास के लिए रूचिकर बनाना, जिससे छात्रों को सरलता से शिक्षा प्रदान किया जा सके। भाषा शिक्षा में गतिविधियों का उपयोग आज भी बहुत कम किया जा रहा है। भाषा शिक्षा में व्याकरण, कहानी आदि को पढ़ाने के लिए विविध प्रकार की गतिविधि का प्रयोग करना चाहिए, ताकि वह आसानी से सीख सकें।

1.1.0.0 हिन्दी शिक्षण -

हिन्दी हमारे देश में युग-युग से विचार विनियम का माध्यम रही है। वह केवल उत्तर भारत की भाषा नहीं है। बल्कि समूचे देश को एक सूत्र में बाँधने वाली भाषा है। भारत वह एक देश है, जिसमें बहुधर्मी, बहुभाषी लोग निवास करते हैं। इन विभिन्नताओं में एकता लाने का कार्य हिन्दी भाषा के द्वारा ही संभव है।

हिन्दी भाषा का भाषा के रूप में महत्व यह है कि जब दो या अधिक हिन्दी भाषी लोग एकत्र होते हैं, तब वे अपने सम्प्रेषण हिन्दी भाषा के द्वारा करते हैं और यह हमें उद्योग व्यापार एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक दिखाई देता है।

उच्च ज्ञान प्राप्त हेतु भी द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का महत्व है। हिन्दी साहित्य के रूप में हिन्दी का महत्व है। हिन्दी साहित्य के महान् इतिहास का ज्ञान, हिन्दी भाषा की संरचना का ज्ञान, साहित्यकारी काव्य–शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हिन्दी का महत्व है।

1.1.1.0 प्रारम्भिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण –

शिक्षा के विभिन्न स्तरों में से प्राथमिक स्तर महत्वपूर्ण माना जाता है। आज देश में प्रारम्भिक स्तर पर हिन्दी भाषा का ज्ञान विद्यार्थी अपनी रूचि योग्यता शिक्षक की शिक्षण की कुशलता पर आधारित होता है। जिस क्रिया द्वारा विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा से संबंधित भाषा कौशलों में प्रवीणता प्रदान करके उसके चिन्तन तथा अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाया जाता है तथा जीवन से संबंधित किसी भी विषय का अध्ययन करने का सामर्थ्य विकसित किया जाता है। उसे **"हिन्दी शिक्षण"** कहा जाता है।

प्रारम्भिक स्तर

- विद्यार्थियों के उच्चारण को हिन्दी के मानक रूप की ओर लाना।
- दूसरों के विचारों को सुनकर समझाने की योग्यता का विकास करना।
- साहित्य की प्रमुख विधाओं की रचना के माध्यम से पहचानना।
- अपने विचारों को लिखकर अभिव्यक्त करने की योग्यता का विकास करना।
- विभिन्न सन्दर्भों में व्याकरण सम्पन्न भाषा का व्यावहारिक प्रयोग करने में समर्थ करना।
- भाषा के प्रमुख तत्वों से परिचय करना।
- भाषा चिन्तन की योग्यता का विकास करना।
- लेखन की यांत्रिक कुशलताओं में पूर्णता लाना।

ज्ञान

- छात्रों को मूल ध्वनियों, ध्वनि समूहों, ध्वनियों के अन्तर, शब्द योजना, शब्द–शक्तियों, छंद, अलंकारों और रसों का ज्ञान कराना।
- छात्रों को शब्दों के शुद्धरूप एवं उनकी शुद्ध वर्तनी वाक्य रचना के नियम और विराम चिह्नों के सही प्रयोग का ज्ञान कराना।

- छात्रों को साहित्य की विभिन्न विधाओं और उनकी विभिन्न लेखन शैलियों का ज्ञान कराना।

कौशल

- छात्रों को बोलने में भाषा के सर्वमान्य रूप का प्रयोग करने और लिखने में विषय और अवसर के अनुकूल भाषा एवं शैली का प्रयोग करने में निपुण करना।
- छात्रों में शुद्ध वर्तनी लिखने, शुद्ध वाक्य रचना करने और विराम चिह्नों के सही प्रयोग करने और कम से कम भाषा में अधिक से अधिक विचार अभिव्यक्त कर सकने के कौशल का विकास करना।
- छात्रों को भाषा गुण दोष परखने एवं साहित्य रचनाओं की भाषा का मूल्यांकन करने योग्य बनाना।

रूचि

- छात्रों में शुद्ध भाषा सीखने और शुद्ध भाषा के प्रयोग करने की रूचि उत्पन्न करना।
- छात्रों में भाषा के गुण दोष परखने की रूचि उत्पन्न करना।

अभिवृत्ति

- छात्रों में व्याकरण सम्मत भाषा के प्रति आदर एवं सम्मान का भाव जागृत करना।
- छात्रों में भाषा एवं साहित्य की समीक्षा करने की अभिवृत्ति का विकास करना।

1.1.2.0 हिन्दी शिक्षा का दर्शन –

- बच्चे हिन्दी से भयभीत होने की बजाए उसका आनन्द उठाऐं।
- बच्चे हिन्दी को ऐसा विषय मानें, जिस पर वे बात कर सकते हैं, जिसमें संप्रेषण हो सकता है, आपस में जिस पर चर्चा कर सकते हैं और जिस पर साथ–साथ काम कर सकते हैं।
- बच्चे सार्थक समस्याऐं उठाऐं और उन्हें हल करें।

- बच्चे अमूर्त का प्रयोग संबंधी को समझने, संरचनाओं को देख पाने और चीजों का विवेचन करने, कथनों की सत्यता या असत्यता को लेकर तर्क करने में पाएँ।
- अध्यापक कक्षा में प्रत्येक बच्चे के साथ इस विश्वास के आधार पर काम करें कि प्रत्येक बच्चा हिन्दी सीख सकता है।

अतः हिन्दी का अध्यापन महत्वकांक्षी इस अर्थ में होना चाहिए कि वह उपरोक्त उच्च लक्ष्य की प्राप्ति का प्रयास करे, न कि केवल सीमित लक्ष्य की प्राप्ति का।

1.2.0.0 रचनावाद क्या है? –

रचनावाद सीखने का एक ऐसा विचार है, जिसका आधार यह है कि ज्ञान कोई वस्तु नहीं है, जो शिक्षक के द्वारा विद्यार्थियों को कक्षा में सीधे उनकी डेस्क पर पहुँचाई जाए, बल्कि ज्ञान वह है जो कि विद्यार्थी मानसिक गतिविधियों एवं क्रियाओं द्वारा स्वयं निर्मित करता है। विद्यार्थी ही ज्ञान का निर्माता होता है। रचनावाद एक शैक्षिक दर्शन है, जो यह मानता है कि,

विद्यार्थी अपना ज्ञान स्वयं अपने अनुभव द्वारा वातावरण द्वारा स्वयं निर्मित करता है। विद्यार्थी किसी संकल्पना को सम्पूर्ण रूप से तथा छोटे-छोटे अंशों के द्वारा सीखता है। विद्यार्थी भय रहित वातावरण में ज्यादा तथा सुगमता से सीखता है। पुस्तकीय ज्ञान को वातावरण से जोड़ने पर अधिगम में सुविधा होती है। शिक्षक ही ज्ञान का स्त्रोत नहीं है तथा विद्यार्थी कक्षा में खाली दिमाग से नहीं आता है, वह वातावरण और अनुभव से बहुत सारा ज्ञान कक्षा में लेकर आता है। विद्यार्थी सीखने की प्रक्रिया में भागीदारी का मौका मिलने पर ज्यादा विश्वास तथा रूचि के साथ सीखता है।

जॉनसन के शब्दों में, "Constructivism, founded on Kantian beliefs claims that reality is constructed by the knower based upon mental activity. Humans are perceivers and interpreters who construct their own reality though engaging in those mental activities. Thinking is grounded in perception of physical and social experiences, which can only be comprehended by the mind. What the mind produces are mental models that explain to the knower what he or she has

perceived. We all conceive of the external reality somewhat differently, based on our unique set of experience with the coral and our beliefs about them."

1.2.1.0 रचनावाद (स्वयं सीखने का सिद्धान्त) –

रचनावाद एक ऐसा सिद्धान्त है, जो यह बताता है कि मनुष्य में किस प्रकार ज्ञान निर्मित होता है, जबकि कोई नवीन जानकारी पूर्व ज्ञान के सम्पर्क में आती है, जो कि अनुभवों पर आधारित है। इसकी जड़ें जीव विज्ञान नया संज्ञानात्मक मनोविज्ञान है। ये रचनाऐं जो अलग-अलग वास्तविकताऐं होती हैं, उनको फिल्टर करके एक सही क्रम में नया स्वरूप प्रदान करती है।

Von Clubersfield ने रचनावाद की "A theory of knowledge with roots in philosophy, psychology and cybernetics." बताया है।

ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक उद्गम् – जोन डिवी के अनुसार विद्यार्थियों को अधिगम के लिए एक्टिव लर्निंग आवश्यक है, जिससे उनका अधिगम प्राकृतिक रूप से हो सके। अनुभव आधारित अधिगम वातावरण के अनुसार ज्ञान का विकास करता है। उनका मानना था कि शिक्षा पूर्व अनुभवों पर आधारित होनी चाहिए और उन विधियों के द्वारा शिक्षण होना चाहिए, जिससे वे अपनी सोच का दायरा बढ़ा सकें, जो कि अधिगम के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं।

मारिया मोन्टेसरी के अनुसार, अनुभव आधारित अधिगम बहुत महत्वपूर्ण है। इनका मानना था कि रचनावादी, अधिगम प्रक्रिया में सीधे पर्यावरण से ज्ञान अर्जित करना विद्यार्थियों के लिए अत्यधिक विश्वसनीय एवं महत्वपूर्ण है। डेविड कोल्ब ने भी अनुभव आधारित अधिगम पर जोर दिया है, जो कि परिस्थिति अनुसार ज्ञान अर्जित करने पर बल देता है।

1.2.1.1 रचनावादी –

John Dewey (1859 – 1952)
Maria Montessori (1870 – 1952)
Wludyslaw Strzeminski (1895 – 1952)
Lev Vygatsky (1849 – 1934)
Jean Plaget (1896 – 1980)

Geore Kelly (1905 - 1967)

Heing Von Foerster (1911 - 2002)

Ernst Von Glasersfeld (1917 - 2010)

Paul Watzlawisk (1921 - 2009)

Edgar Morin (1921)

Humberto Muturana (1928)

Lubzlo Gurai (1935)

David A. Kolb (1939)

1.2.1.2 पियाजे का रचनावाद –

Jean Piaget (1896 – 1980) के अनुसार अधिगम की अभिप्रेरणा हेतु प्राथमिक आवश्यकता वातावरण से समायोजन है। लगातार अंतः क्रिया मौजूदा स्कीमास, एसिमिलेशन, एसीमिडेशन एवं इकिंपलिबिरयम नए अधिगम को जन्म देते हैं। पियाजे ने मनोवैज्ञानिक विकास के लिए चार अवस्थाओं को स्पष्ट किया है :-

1. **इन्द्रियजनित गामक अवस्था (2 वर्ष की आयु तक)** – इस अवस्था में बालक अपने चारों ओर के वातावरण को अपनी ज्ञानेन्द्रियों के अनुभवों के माध्यम से ही जानते हैं।

2. **पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2 वर्ष से 7 वर्ष की आयु के मध्य)** – इस अवस्था में बालक में संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

3. **मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7 वर्ष से 11 वर्ष की आयु के मध्य)** – इस अवस्था में बच्चों का चिन्तन अधिक क्रमबद्ध एवं तर्क संगत होना प्रारम्भ कर देता है।

4. **अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष से 15 वर्ष की आयु के मध्य)** – इस अवस्था में संश्लेषण, विश्लेषण, नियमीकरण तथा सूक्ष्म सिद्धान्तों की स्थापना संबंधी उच्च मानसिक क्षमताओं का समुचित विकास हो जाता है।

पियाजे का सिद्धान्त खोज पर आधारित है, जिसके अनुसार बच्चों को उचित वातावरण उपलब्ध करवाना चाहिए, जिससे अधिगम अर्थपूर्ण हो सके और बच्चों की अपनी क्षमता के अनुसार ज्ञान निर्मित करने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। इनके अनुसार रचनावादी कक्षा में विद्यार्थी को प्रमुख मानते हुए उन्हें अलग-अलग

गतिविधियाँ करने का अवसर प्रदान करना चाहिए, जिससे वे अपनी समझ के अनुसार ज्ञान निर्मित कर सकें।

1.2.1.3 वायगोट्स्की का रचनावाद (1896–1934) –

वायगोट्स्की का रचनावादी सिद्धान्त सामाजिक रचनावाद के नाम से प्रसिद्ध है। इनका मानना था कि अधिगम एवं विकास एक साथ घटित होता है। जिससे बच्चों का संज्ञानात्मक विकास सामाजिकरण एवं शिक्षा के संदर्भ में होता है। बच्चों को प्रत्यक्षीकरण ध्यान और उनकी याद्दाश्त की क्षमता उनके संज्ञानात्मक उपकरणों के द्वारा परिवर्तित होती है। ये संज्ञानात्मक उपकरण संस्कृति के द्वारा जैसे इतिहास, समाज, परम्पराऐं, भाषाऐं और धर्म होते हैं। बच्चा पहले सामाजिक वातावरण के सम्पर्क में आता है, उसके बाद इंटरपर्सनल लेवल पर और उसके पश्चात् उनकी आत्मसात् कर अनुभव प्राप्त करता है। शुरुआती और नये अनुभव बच्चे को प्रभावित करते हैं, जिससे वे बाद में नये विचारों को सुगमता से निर्मित कर लेते हैं। चूँकि इनके रचनावाद की सार्थकता संस्कृति एवं समाज के संदर्भ में है, इसलिए इनका रचनावाद, "सामाजिक रचनावाद" कहलाता है। इनके अनुसार रचनावादी अधिगम वातावरण विद्यार्थी को एकत्रित करने तथा प्रतिक्रिया करने को अभिप्रेरित करता है। इस प्रकार की समूह शिक्षा गलत जानकारी, गलत पूर्वानुमान आदि को घटाने में सहायक होती है।

1.2.1.4 रचनावादी कक्षा–कक्ष –

- शिक्षा विद्यार्थी केन्द्रित होनी चाहिए।
- कक्षा का वातावरण लोकतांत्रिक होना चाहिए।
- यह संरचित होना चाहिए।
- विद्यार्थियों को कक्षा में विचारों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।
- प्रत्येक विद्यार्थी को कक्षा में विशेष माना जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों के पूर्व अनुभवों को बताने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- अधिगम रिलेशनशिप शिक्षक एवं छात्र दोनों के लिए महत्वपूर्ण होनी चाहिए।
- विद्यार्थियों को कोई ज्ञान सिखाने से पहले उस ज्ञान की बच्चों को पूर्व के अनुभव से जोड़कर बताना चाहिए।

- शिक्षण कार्य ऐसी विधियों के द्वारा करवाना चाहिए, जिसमें बच्चे अधिक से अधिक सक्रिय रह सकें।
- बच्चों को समूह में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- बच्चों को समय-समय पर इनाम वितरण करके उनके उत्साह को बढ़ाना चाहिए। एवं गलती करने पर उनको गलती से अवगत् कराना चाहिए।
- ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना।

शिक्षक की भूमिका –

- ज्ञान के भण्डार के रूप में
- मार्गदर्शक के रूप में
- सहायक के रूप में
- प्रभावशाली व्यक्तित्व
- फेसीलीटर के रूप में
- गार्डनर के रूप में
- प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए
- नये ज्ञान उपलब्ध कराने में
- समस्या समाधान में

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005 के अनुसार –

रचनात्मक परिप्रेक्ष्य में, सीखना ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया है। विद्यार्थी सक्रिय रूप से पूर्व प्रचलित विचारों में उपलब्ध सामग्री/गतिविधियों के आधार पर अपने लिए ज्ञान की रचना करते हैं। (अनुभव) उदाहरण के लिए यातायात व्यवस्था को पाठ या चित्र या दृश्य सामग्री का उपयोग करते हुए पढ़ाने तथा उस पर विद्यार्थियों में चर्चा कराने से उनमें यातायात व्यवस्था ज्ञान के निर्माण में मदद की जा सकती है। आरम्भिक निर्भित (मानसिक चित्रण) सड़क यातायात के विचार पर आधारित हो सकती है और ग्रामीण इलाके का कोई विद्यार्थी बैलगाड़ी के इर्द-गिर्द अपने विचार गढ़ सकता है। विद्यार्थी दी गई गतिविधियों (अनुभव) के माध्यम से बाह्य यथार्थ, यातायात व्यवस्था की मानसिक छवि गढ़ सकते हैं। विचारों की रचना एवं पुर्नरचना उनके विकास के आवश्यक मिश्रण हैं। उदाहरण के लिए यातायात

व्यवस्था पर आरम्भिक विचार सड़क यातायात पर निर्मित होगा और बाद में यह दूसरे प्रकार के यातायात जैसे - समुद्र और वायु यातायात को समाहित करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का उपयोग करते हुए पुर्नरचित होगा। विद्यार्थियों को बाद में उपयुक्त गतिविधियों के माध्यम से यातायात व्यवस्था और मानव जीवन/अर्थ व्यवस्था के बीच संबंधों के बारे में बताया जा सकता है। (कारण–प्रभाव) हालांकि इस ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया का एक सामाजिक पहल यह भी है कि जटिल कार्य के लिए आवश्यक ज्ञान समूह परिस्थितियों में निहित होता है। निर्मित यह संकेत देती हैं कि हर विद्यार्थी व्यक्तिगत और सामाजिक तौर पर अर्थ का निर्माण करता है। अर्थ निर्माण सीखता है। रचनात्मक परिप्रेक्ष्य ऐसी रणीनतियाँ उपलब्ध करवाता है, जो सबके द्वारा सीखने को प्रोत्साहित करता है।

रचनावाद उपागम में विद्यार्थी के स्वयं के अनुभव एवं किताबी ज्ञान के अलावा वातावरण अनुरूप भी ज्ञान के स्त्रोत हैं। विद्यार्थियों में संकल्पनाओं एवं घटनाओं का विश्लेषण करने की क्षमता का विकास किया जाता है। जिसमें बच्चे क्या, क्यों, कैसे प्रश्नों का उत्तर ढूँढ सकें तथा आलोचनात्मक चिंतन का विकास किया जा सके। छात्र के स्वयं के अनुभव को कक्षा में व्यक्त करने का अवसर दिया जाए।

1.2.1.5 रचनावाद अधिगम की परिस्थिति –

अवलोकन –

विद्यार्थी प्राथमिक स्त्रोत सामग्री का अवलोकन करते हैं, जो कि उनके प्राकृतिक संदर्भ से जुड़ी होती है।

संदर्भीकरण –

वे अपने विश्लेषण को पाठ से मिलाते हैं।

संज्ञानात्मक शिक्षार्धन –

शिक्षक विद्यार्थियों की सहायत करते हैं, जिससे वे सटीक अवलोकन कर सकें तथा जानकारी की व्याख्या और विश्लेषण कर सकें।

सहयोग –

विद्यार्थी समूह बनाकर कक्षाभ्यास करते हैं, जबकि शिक्षक उनकी इसमें मदद करते हैं।

निर्वचन सृजन –

विद्यार्थी विश्लेषण करते हैं तथा अपनी प्राक्कल्पना को प्रमाणित करने के लिए प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

बहुविध व्याख्या –

विद्यार्थी विभिन्न व्याख्याऐं प्रस्तुत करते हैं और अपने विश्लेषण और पाठ की मदद से समूह के अन्दर और बाहर अपने तर्क की रक्षा करते हैं।

साक्ष्यों और बहसों द्वारा वे कई तरह से अपनी व्याख्या करते हुए उतार तक पहुँचते हैं।

बहुविध अभिव्यक्तियाँ –

इस प्रक्रिया में आगे-पीछे जाते हुए और हर संदर्भ को जोड़ने के कल में विद्यार्थी यह देखते हैं कि इसमें सामान्य सिद्धान्त यह है कि वे जो भी कर रह हैं, वह व्यक्त हो रहा है।

1.2.1.6 रचनावाद में प्रयोग किये जाने वाले शिक्षण आव्यूह –

बूनर का संप्रत्यय उपलब्धि प्रतिमान –

यह प्रतिमान फेरम बूनर एवं उसके सहयोगियों के चिन्तन एवं अनुसंधान का परिणाम है। हमारा परिवेश अत्यंत जटिल एवं विविधता तथा पेचादगी से भरा हुआ है। इस विविधता और पेचादगी में हम केवल अपने आप को इसलिए समायोजित कर पा रहे हैं, क्योंकि हम वस्तुओं को पहचानने, उनमें भेद करने, उनका वर्गीकरण करने और संबंधित संप्रत्ययों का निर्माण करने की क्षमता रखते हैं एवं सम्प्रत्यय तीन तथ्यों से बना हुआ होता है – उदाहरण : गुण और गुणधर्म।

कन्सेप्ट मेपिंग –

इसके द्वारा विचारों का मेप बनाया जाना है, जो कि पूर्ण संकल्पनाओं को सीखने में सहायक होता है।

प्रोजेक्ट विधि –

इसमें स्वयं करके सिखाते हैं।

गतिविधि आधारित अधिगम –

इसमें समूह में कार्य करवाया जाता है, जिससे विद्यार्थी सक्रिय रहते हैं तथा उनकी रूचि बनी रहती है।

पूछताछ आधारित अधिगम –

बच्चों की प्रकृति जिज्ञासु होती है, जिसमें जिज्ञासा की तृप्ति हेतु वे प्रश्न पूछते हैं, जिससे उनका अधिगम होता है।

1.2.1.7 रचनावाद क्यों महत्वपूर्ण है? –

शिक्षण का पाठ्यक्रम एवं उसकी विधियाँ परिवर्तित होती रहती हैं। सभी विषयों का क्षेत्र दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इसीलिए विद्यार्थियों के निष्क्रिय रिसीवर से एकटिव लर्नर बनने की आवश्यकता है। ऐसे में रचनावाद उपागम के प्रयोग से ज्ञान विद्यार्थियों की क्रिएटिव थिंकिंग पर बल देता है। जिससे वे नवीन गतिविधियाँ करते हुए सीखने को अभिप्रेरित होते हैं। जिमेलमेन, डेनियल एवं हाइड (1993) के अनुसार रचनावाद, सभी विषयों में नवीन विचारों का उद्गम है, जिससे शिक्षक विद्यार्थियों के सामने ऐसा वातावरण बना सकें, ताकि वे स्वयं अपनी समझ विकसित करता है तथा उनकी रचनात्मकता को बाहर लाता है। इस प्रकार रचनावाद वर्तमान शिक्षा की आवश्यकता है।

1.2.1.8 रचनावाद उपागम की आलोचना –

ज्यादातर संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों ने रचनावाद के केन्द्रिय दावे पर प्रश्न चिन्ह अंकित किया है। पियाजे का संज्ञानात्मक सिद्धांत, जो कि अवस्था आधारित है, यह बताता है कि समझ से अधिक अधिगम व्यक्ति की वास्तविक क्षमता को क्षीण करता है और उसकी संकल्पना से विकसित परिभाषा को अधिगम में नहीं लाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो यह अधिगम का ह्रास करता है। इसीलिए विद्यार्थी कितना भी क्रियाशील क्यों न हो, उसके सीखने का वातावरण वास्तविकता में उसकी परिस्थिति के अनुसार विकसित होना

चाहिए। शिक्षाविदों ने रचनावाद उपागम की प्रभावशीलता पर भी प्रश्न-चिन्ह अंकित किया है। कुछ इस बात पर जोर देते हैं कि करके सीखने के द्वारा उचित अधिगम होता है। इन विरोधात्मक कथनों की मेयर (2004) ने बारिकी से स्पष्ट किया है। इन्होंने इसे "Constructivist Teaching Fallacy" कहा, क्योंकि यह एकटिव लर्निंग के साथ एक्टिव टीचिंग के बराबर है। जबकि मेयर के विद्यार्थियों को अधिगम के दौरान "Cognitively Active" होना चाहिए तथा शिक्षक को "Guided Practice" का उपयोग करना चाहिए।

1.3.0.0 अध्ययन की आवश्यकता -

शिक्षक शिक्षण में व्यवहार दृष्टिकोण का अनुसरण करते हैं, जिससे शिक्षार्थी निष्क्रिय रिसिवर के रूप में होते हैं। विद्यार्थी केवल शिक्षक द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन करने के लिए मजबूर हो जाते हैं, उनके लिए शिक्षा बोझ बन जाती हैं, जिसका उपयोग वे अपने जीवन में नहीं कर पाते। यदि शिक्षार्थियों के पिछले अनुभवों के द्वारा उनके ज्ञान का निर्माण किया जाता है, तो वह स्मृति में स्थिर हो जाता है। विद्यार्थी रचनावाद दृष्टिकोण द्वारा वास्तविक समस्या को हल करने, चर्चा करने, प्रश्न पूछने में सक्षम हो सकेंगे, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सही दिशा में संभव हो सकेगा।

बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं कि जहाँ यह महसूस हो कि उन्हें महत्वपूर्ण माना जा रहा है। हमारे स्कूल आज भी सभी बच्चों को ऐसा महसूस नहीं करवा पाते। सीखने का वातावरण भय तथा तनाव मुक्त होना चाहिए। बच्चों के अनुभव को ऐसे संशाधनों के रूप में देखा जाए, जिन्हें विद्यालय में जाँचा तथा विश्लेषित किया जाना है। उनकी विविध क्षमताओं को मान्यता मिले, यह माना जाए कि सभी बच्चों में सीखने की क्षमता है और सभी की ज्ञान एवं कौशल तक पहुँच है।

शिक्षक को ही ज्ञान का प्रमुख आधार नहीं माना, बल्कि बालक के वातावरण व व्यवहार दोनों ही प्रमुख हैं। बच्चे अपनी आस-पास की दुनिया से बहुत ही सक्रिय रूप से जुड़े रहते हैं, खोजबीन करते हैं। प्रतिक्रिया करते हैं, चीजों के साथ कार्य करते हैं। इसलिए कक्षा में बच्चों के अनुभवों को लाना तथा उसे पुस्तकीय ज्ञान से जोड़ना ज्यादा प्रभावी होगा।

एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार विद्यार्थियों में स्वाभाविक प्रवृत्ति का विकास करना, उन्हें ज्ञान निर्माण के अवसर उपलब्ध कराना, शिक्षक को एक मार्गदर्शन प्रदान करना, जिससे बच्चों में तर्कशक्ति का विकास हो सके, जो कि हिन्दी विषय से अधिक संभव हो सकता है तथा शिक्षक को रचनावाद उपागम से पढ़ाने के तरीकों से प्रेरित कर सकते हैं। हिन्दी विषय को गतिविधि आधारित शिक्षण, कंसेप्ट मेपिंग, प्रोजेक्ट विधि, रोल प्ले आदि कौशलों की सहायता से समझा जाता है, जिससे ज्ञान स्थायी हो जाता है।

बालक के स्वयं के अनुभव को कक्षा में लाना तथा उसे स्कूल या किताबी ज्ञान से जोड़ना आवश्यक होता है। बालक सामाजिक वातावरण में कुछ सीखता है। पुस्तकीय शब्दों को समझने में कठिनाई हो सकती है, किन्तु प्रत्यक्ष ज्ञान जो कि आस–पास के वातावरण अनुभव के द्वारा प्राप्त होती है, वह अधिगम को अधिक सरल व सहज बना देता है। पढ़ाई को सरल प्रणाली में मुक्त करना तथा ज्ञान को स्कूल के बाहरी ज्ञान से जोड़ना। अधिकांश अधिक बच्चों से ज्ञान को प्राथमिकता देना आवश्यक है। कक्षा में केवल अध्यापक का स्वर सुनाई देता है। बच्चे केवल शिक्षक के सवालों को ही जवाब देने या कहारने के लिए बोलते हैं। कक्षा में व शायद कभी स्वयं कुछ करके देख जाते हैं। उन्हें पहल करने के अवसर भी नहीं मिलते। किताबी ज्ञान को दुहराने की क्षमता के विकास के बजाय पाठ्यचर्चा बच्चों को इतना समक्ष बनाये कि वे अपनी आवाज़ ढूँढ सकें, अपने उत्सुकता का पालन कर सके, स्वयं करे, सवाल पूछे, जाँचे–परखे और अपने अनुभव को स्कूली ज्ञान से जोड़ सकें। पूछताछ, अन्वेषण, प्रश्न पूछना, वाद–विस्तार, व्यवहारिक प्रयोग व शिक्षा ऐसा चिंतन, जिससे सिद्धांत बर सके और विचार/स्थितियों की रचना हो सके। ये सभी बच्चों की सक्रिय व्यस्तता को सुनिश्चित करते हैं। स्कूलों द्वारा ऐसे अवसर प्रदान किए जाने चाहिए, ताकि बच्चे प्रश्न पूछकर और चर्चा एवं चिंतन कर अवधारणाओं को आत्मसात् करें या नए विचार रखें। इस प्रक्रिया के जरिए विभिन्न अवधारणाओं एवं कौशल सीखने के लिए व स्थितियों तक पहुँचने के लिए बच्चों की सक्रिय भूमिका को चुनौती का तत्व निर्णायक है। एक विशेष आयु–वर्ग के लिए सरल हो सकता है और किसी अन्य आयु वर्ग के लिए कतई परोक्ष और उबाउ।

समाज में मिलने वाली अनौपचारिक शिक्षा विद्यार्थी में अपना ज्ञान स्वयं सृजित करने स्वाभाविक क्षमता को विकसित करती है। सभी बच्चे स्वभाव में ही

सीखने के लिए प्रेरित रहते हैं। उनमें सीखने की क्षमता होती है। विद्यार्थी के संदर्भ में रखना, शैक्षिक अनुभव की रूपरेखा बनाना, विद्यार्थी के पुराने अनुभव को नये ज्ञान से जोड़ना, Student Ownership Learning की प्राथमिकता देना, बच्चे स्कूल में प्रतिदिन अपने आस-पास की दुनिया के अनुभव लेकर आने हैं, उनके इस अनुभव का प्रयोग करना, विद्यार्थी को अनुभव के आधार पर पुस्तकीय ज्ञान को जोड़ना।

प्रयोगकर्त्ता द्वारा शोध का चयन करने का मुख्य उद्देश्य रचनावाद उपागम से विद्यार्थियों में स्वाभाविक प्रवृत्ति का विकास करना। उन्हें ज्ञान निर्माण का अवसर उपलब्ध करना तथा शिक्षक को एक मार्गदर्शन प्रदान करना, बच्चों में तर्कशक्ति का विकास हो सके, जो कि हिन्दी विषय से अधिक संभव हो सकता है तथा शिक्षक की रचनावाद उपागम से पढ़ाने के तरीकों से प्रेरित कर सकते हैं तथा रचनावाद उपागम को पाठ्यक्रम निर्माण में स्थान दिया जाए। हिन्दी एक ऐसा विषय है, जहाँ पर विषय वस्तु को रटा नहीं सकते। बल्कि उसे गतिविधि आधारित शिक्षण, प्रोजेक्ट विधि, सहायक प्रतिमा एवं रोलप्ले आदि कौशलों की सहायता से आसानी से समझा जा सकता है, जो कि स्थायी हो जाता है।

रचनावाद उपागम से शिक्षण प्रक्रियायें, बच्चों के अनुभवों की कक्षा में लाना, उनमें तार्किक शक्ति का विकास करना, बच्चों की जिज्ञासा, खोज व लगातार प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति का मौका देना, जिससे बालक का सर्वांगीण विकास सही दिशा में हो सके।

अतः शोध अध्ययन चयन का मुख्य उद्देश्य रचनावाद उपागम की प्रमाविकता को इन क्षेत्रों में देखते हुए यह ज्ञात करना है कि यह उपागम हिन्दी उपलब्धि को किस सीमा तक प्रभावित करता है।

1.4.0.0 पारिभाषिक शब्दावली –

1.4.1.0 रचनावाद उपागम –

यह एक शैक्षिक दर्शन है, जो यह मानता है कि,

- विद्यार्थी अपना ज्ञान स्वयं अपने अनुभव तथा वातावरण द्वारा स्वयं निर्मित करता है।

- विद्यार्थी किसी संकल्पना को सम्पूर्ण रूप से छोटे-छोटे अंशो के द्वारा सीखता है।
- विद्यार्थी भय रहित वातावरण में ज्यादा तथा सुगमता से सीखता है।
- पुस्तकीय ज्ञान को वातावरण से जोड़ने पर अधिगम में सुविधा होती है।
- शिक्षक ही ज्ञान का स्त्रोत नहीं है, तथा विद्यार्थी कक्षा में खाली दिमाग से नहीं आता है, वह वातावरण और अनुभव से बहुत सारा ज्ञान कक्षा में लेकर आता है।
- विद्यार्थी सीखने की प्रक्रिया में भागीदारी का मौका मिलने पर ज्यादा विश्वास तथा रूचि के साथ सीखता है।

यह विचार हैं कि ज्ञान मानसिक गतिविधि के आधार पर ज्ञाता द्वारा निर्मित सीखने का एक सिद्धान्त है। यह महत्वपूर्ण सोच सीखने की एक गतिविध है, जो इस पर आधारित है कि जिसमें विचारों और दृष्टिकोण अपने पूर्व ज्ञान और अनुभव के आधार पर परीक्षण करके अपने स्वयं के ज्ञान को स्थिति के लिए उन्हें लागू करने के और पूर्ण मौजूदा बौद्धिक रचना के साथ नए ज्ञान को एकीकृत करना।

1.4.2.0 पारम्परिक विधि -

सामान्यतः विद्यालयों में शिक्षण हेतु व्याख्यान विधि, प्रश्नोत्तर तकनीक का प्रयोग किया जाता है, इसे परम्परागत विधि माना जाता है।

1.4.3.0 शैक्षणिक उपलब्धि -

वर्तमान समय में व्यक्ति के ज्ञानात्मक विकास के मापन का एक आधार उस व्यक्ति की शैक्षणिक उपलब्धि है। विद्यार्थी किसी विषय वस्तु के ज्ञान तथा समझ को लिखित एवं मौखिक रूप में प्रस्तुत कर सकता है। वह उसकी उपलब्धि कहलाती है।

1.5.0.0 समस्या कथन -

कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की हिन्दी उपलब्धि पर रचनावाद उपागम के प्रभाव का अध्ययन। (गुजरात गाँधी नगर के संदर्भ में।)

1.6.0.0 अध्ययन के उद्देश्य –

1. रचनावाद उपागम की प्रभाविता का अध्ययन करना।

(अ) कक्षा छठवीं के विद्यार्थियों की हिन्दी उपलब्धि के संदर्भ में।

(ब) कक्षा छठवीं की हिन्दी उपलब्धि पर उपागम की प्रतिक्रिया का अध्ययन।

1.7.0.0 अध्ययन की परिकल्पनाऐं –

1. कक्षा छठवीं के विद्यार्थियों को हिन्दी उपलब्धि पर उपागम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है, जब हिन्दी उपलब्धि के पूर्व परीक्षण के अंकों को सहचर के रूप में लिया गया।

1.8.0.0 अध्ययन की परिसीमाऐं –

1. यह शोध गुजरात राज्य के गाँधीनगर शहर के विद्यालय में किया जायेगा।
2. गाँधी नगर की प्राथमिक विद्यालय में से कक्षा छठवीं के हिन्दी विषय को चुना जायेगा।
3. रचनावाद उपागम पर आधारित केवल दस पाठों द्वारा उपचार दिया जायेगा।